IJIRSET

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014

नीरजा ! जिस पर भारत ही नहीं पाकिस्तान, अमेरिका को भी गर्व है

डॉ आलोक मिश्र

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग, एस एस कॉलेज, शाहजहांपुर

सारांश

नीरजा 22 साल की एक लड़की थी. ये उम्र होती है जब समझदारी सिर पर सवार होने की कोशिश कर रही होती है. और इंसान का दिमाग बचपन जवानी के बीच रस्साकसी में झूलता है. इस उम्र में नीरजा ने अपनी जान दी, दूसरों की जान बचाने के लिए. इस तरह से जान तो फौजी गंवाते हैं. पर नीरजा न तो फौजी थी, न ही कोई सोशल वर्कर. 7 सितंबर, 1963 को चंडीगढ़ में जन्मी. मां रमा भनोट और पिता हरीश भनोट की लाडली थी. प्यार से वो उसे लाडो बुलाते. पिता पत्रकार थे. 21 साल की उम्र में शादी हो गई. पति ने दहेज की डिमांड रख दी. नीरजा भनोट का जन्म 7 सितंबर 1963 को चंडीगढ़ में हुआ था। उनके पिता हरीश भनोट पेशे से पत्रकार थे। मां रमा भनोट और पिता हरीश भनोट उन्हें प्यार से "लाडो" के नाम से बुलाते थे। 21 वर्ष की आयु में उनका विवाह एक बिजनेसमैन के साथ हुई। शादी के बाद वे "खाड़ी के देश" पति के साथ चली गई। परंतु दहेज के मांग से तंग आकर शादी के 2 माह के अंदर ही पति का घर छोड़ पिता के पास चली आई। इसके बाद पैन ऍम में फ्लाइट अटेंडेंट की नौकरी के लिये अप्लाई किया. चुने जाने के बाद मायामी गई. ट्रेनिंग के दौरान नीरजा को एंटी-हाइजैकिंग कोर्स में एड्मिशन लेना हुआ. मां नहीं चाहती थी कि नीरजा दाखिला लें. उन्होंने नीरजा को नौकरी छोड़ने को कहा. दुनिया में हम एक ही आदमी को अपने हिसाब से समझा सकते हैं. वो हैं मम्मी. तो नीरजा ने भी समझा दिया. कहा सब अगर ऐसा ही करेंगे तो देश के फ्यूचर का क्या होगा. पैन एम में जुड़ने से पहले नीरजा ने मॉडलिंग की थी. वीको, बिनाका टूथपेस्ट, गोदरेज डिटर्जेंट और वैपरेक्स जैसे प्रोड्क्ट्स के ऐड किए.

परिचय

5 सितंबर, 1986 को एक प्लेन हाइजैक हुआ. पैन एम फ्लाइट 73 मुंबई से न्यूयॉर्क जा रही थीं. प्लेन में 361 यात्री और 19 क्रू मेंबर थे.

कराची एयरपोर्ट पर चार अबू निदाल ग्रुप के चार टेररिस्ट्स ने उसे हाइजैक कर सबको बना लिया होस्टेज. प्लेन में नीरजा सीनियर फ्लाइट अटेंडेंट थी. नीरजा ने जब ये बात पायलट को बताई. तीनों पायलट कॉकपिट से सुरक्षित निकल लिए. उनके जाने के बाद प्लेन और यात्रियों की जिम्मेदारी नीरजा पर थी. आतंकवादियों ने नीरजा को सभी के पासपोर्ट इकठ्टा करने बोला. पता लगाने के

लिए कि इनमें से कौन कौन अमेरिकी है. नीरजा ने पासपोर्ट तो इकठ्टा किए. चालाकी से अमेरिकी नागरिकों के पासपोर्ट छिपा दिए. 17 घंटे के बाद अतंकवादियों ने यात्रियों को मारना शुरू कर दिया. प्लेन में बम फिट कर दिया. नीरजा ने हिम्मत दिखाई. प्लेन का इमरजेंसी डोर खोल दिया. यात्रियों की मदद की जिससे वो सुरक्षित बाहर निकल सकें. तीन बच्चो को निकालने के दौरान आतंकवादियों ने बच्चो को टारगेट कर गोली चलानी चाही. नीरजा की वजह से वो बच गए. वो जाकर भिड़ गई आतंकवादियों से. हाथापाई हुई और एक टेरोरिस्ट ने नीरजा पर गोलियों की बौछार कर दी. उसने इमरजेंसी डोर से खुद को सुरक्षित नहीं निकाला. बाकी पैसेंजर्स को बचाने में जान गवां दी. यदि वे चाहती तो आपतकालीन दरवाजा से खुद को सुरक्षित बाहर निकाल सकती थी। परंतु ऐसा उन्होंने नहीं किया। उसने जान की बाजी लगाकर यात्रियों और क्रू मेंबर को सुरक्षित बाहर निकालने में सफल रही। उनकी शहादत हमेशा ही याद रहेगी।[1,2]

नीरजा ने जान देकर देश-दुनिया की दुवाएं हासिल कींय. अवॉर्ड पाए. भारत सरकार बहादुरी के सबसे बड़े अवॉर्ड अशोक चक्र से सम्मानित किया. पाकिस्तान सरकार ने उन्हें तमगा-ए-इंसानियत से नवाज़ा. अमेरिकी सरकार ने नीरजा को 2005 में जस्टिस फॉर क्राइम अवॉर्ड से सम्मानित किया. 2004 में भारत सरकार ने उनके सम्मान में एक डाक टिकट भी जारी किया था.

दुनिया नीरजा को 'हीरोइन ऑफ हाईजैक' के नाम से जानती है. उनकी याद में मुंबई के घाटकोपर इलाके में एक चौराहे का नाम रखा गया है, जिसका उद्घाटन किया था अमिताभ बच्चन ने. एक संस्था भी है जिसका नाम है नीरजा भनोट पैन ऍम न्यास. ये ऑर्गनाइजेशन महिलाओं को हिम्मत और बहादुरी के लिए अवॉर्ड देती है. हर साल दो अवॉर्ड दिए जाते हैं. एक हवाई जहाज पर रहने वालों को इंटरनेशनल लेवल पर. दूसरा इंडिया में महिलाओं को बहादुरी के लिए. नाइंसाफी और अत्याचार के खिलाफ लड़ने के लिए.

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014

पैन ऍम उड़ान ७३, पैन अमेरिकन वर्ल्ड एयरवेज़ की एक बोइंग 747-121 उड़ान थी, जिसका 5 सितंबर, 1986 को पाकिस्तान के कराची में अबु निदाल ऑर्गेनाइज़ेशन के चार हथियारबंद फिलिस्तीनी उग्रवादियों द्वारा अपहरण कर लिया गया था। ३६० यात्रियों को ले जा रहा यह जहाज मुंबई के सहर अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट से कराची के जिन्नाह अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट आया ही था और जर्मनी के फ्रेंकफर्ट होते हुए अमेरिका के न्यूयॉर्क में जॉन एफ केनेडी एयरपोर्ट जाने की तैयारी में था। जून २००१ में एक अदालत में आतंकवादियों पर यह अभियोग लगा कि वे साईप्रस व इज़राइल में बंदी अपने कुछ साथियों को छुड़ाना चाहते थे। लेकिन 2006 में इस घटना से बचकर निकले एक यात्री माइकल थेक्सटन ने एक पुस्तक प्रकाशित की जिसमें उन्होंने दावा किया कि उन्होंने हाइजैकर्स को बात करते हुए सुना था कि वे जहाज को इज़राइल में किसी निर्धारित निशाने पर क्रैश कराना चाहते थे (9/11 की तरह)।इस हाइजैक के दौरान २० यात्री मारे गए जिनमें १२ भारतीय थे तथा बाकी अमेरिका, पाकिस्तान व मेक्सिको से थे। सभी अपहरणकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया गया और मृत्युदंड दिया गया। किन्तु, बाद में उनकी सज़ा को उम्रकैद में बदल दिया गया जिसका कि भारत व अमेरिका ने विरोध किया।[3,4]

विचार – विमर्श

नीरजा को भारत सरकार ने इस अदभुत वीरता और साहस के लिए मरणोपरांत अशोक चक्र से सम्मानित किया जो भारत का सर्वोच्च शांतिकालीन वीरता पुरस्कार है।अपनी वीरगति के समय नीरजा भनोट की उम्र २३ साल थी। इस प्रकार वे यह पदक प्राप्त करने वाली पहली महिला और सबसे कम आयु की नागरिक भी बन गईं। पाकिस्तान सरकार की ओर से उन्हें *तमगा-ए-इन्सानियत* से नवाज़ा गया।अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नीरजा का नाम *हीरोइन ऑफ हाईजैक* के तौर पर मशहूर है। वर्ष २००४ में उनके सम्मान में भारत सरकार ने एक डाक टिकट भी जारी किया और अमेरिका ने वर्ष २००५ में उन्हें *जस्टिस फॉर क्राइम अवार्ड* दिया है।

नीरजा की समृति में मुम्बई के घाटकोपर इलाके में एक चौराहे का नामकरण किया गया जिसका उद्घाटन ९० के दशक में अमिताभ बच्चन ने किया। इसके अलावा उनकी स्मृति में एक संस्था **नीरजा भनोट पैन ऍम न्यास** की स्थापना भी हुई है जो उनकी वीरता को स्मरण करते हुए महिलाओं को अदम्य साहस और वीरता हेतु पुरस्कृत करती है। उनके परिजनों द्वारा स्थापित यह संस्था प्रतिवर्ष दो पुरस्कार प्रदान करती है जिनमें से एक विमान कर्मचारियों को वैश्विक स्तर पर प्रदान किया जाता है और दूसरा भारत में महिलाओं को विभिन्न प्रकार के अन्याय और अत्याचार के खिलाफ़ आवाज़ उठाने और संघर्ष के लिये। प्रत्येक पुरास्कार की धनराषित १,५०,००० रुपये हैं और इसके साथ पुरस्कृत महिला को एक ट्रोफी और स्मृतिपत्र दिया जाता है। महिला अत्याचार के खिलाफ़ आवाज़ उठाने के लिये प्रसिद्ध हुई राजस्थान की दलित महिला भंवरीबाई को भी यह पुरस्कार दिया गया था।[5,6]

परिणाम

विमान को कब्जे में लेने के बाद जल्द ही अपहर्ता ज़ायद सफारिनी को अहसास हो गया कि चालक दल भाग चुका है अतः उसे अधिकारियों से वार्ता करने पर मजबूर होना पड़ा। प्रथम व वयवसायिक श्रेणी के यात्रियों को विमान के पीछे की ओर जाने का

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014

आदेश दिया गया तथा पीछे के यात्रियों को आगे आने को कहा गया। क्योंकि विमान पूरा भरा था , सुबह के लगभग १० बजे सफारिनी ने विमान के अंदर एक चक्कर लगाया और २९ वर्षीय भारतीय अमेरिकी राजेश कुमार की सीट के आगे रुका। राजेश कैलिफॉर्निया का निवासी था तथा हाल ही में उसे अमेरिकी नागरिकता मिली थी। सफारिनी ने राजेश को आगे आने के लिए कहा और विमान के द्वार पर हाथ सिर के पीछे की ओर रखकर घुटनों के बल बैठने पर मजबूर कर दिया। अधिकारियों, विशेषतः विराफ दरोगा (पैन एम के पाकिस्तान ऑपरेशन्स के अध्यक्ष) से बातचीत करते हुए उसने कहा कि यदि चालक दल को १५ मिनट में विमान में नहीं भेजा गया तो वह राजेश को गोली से उड़ा देगा। थोड़ी ही देर बाद वह अधिकारियों से परेशान हो उठा और सभी के सामने उसने राजेश को सिर में गोली मार दी और उसे दरवाज़े के बाहर ज़मीन पर फेंक दिया। पाकिस्तानी अधिकारियों की रिपोर्ट के अनुसार राजेश की साँस अभी चल रही थी, किन्तु अस्पताल पहुंचने से पहले रास्ते में एम्बुलेंस में ही उसकी मृत्यु हो गई।
सफारिनी तब वापिस अपने बाकी साथियों के पास आ गया तथा उसने फ्लाइट अटेंडेंट्स को सभी यात्रियों के पासपोर्ट इकट्ठा करने के निर्देश दिए। अटेंडेंट्स ने अपनी जान के डर से इस आदेश का पालन किया। विमान की एक परिचारिका नीरजा भनोट को अंदेशा था कि अमेरिकी पासपोर्ट धारकों को खासतौर पर निशाना बनाया जा सकता है, अतः उसने कुछ अमेरिकन पासपोर्ट्स को एक सीट के नीचे छुपा दिया तथा कुछ को कूड़ेदान में।[7,8]

पासपोर्ट इकट्ठे करने के बाद एक क्रू सदस्य ने इण्टरकॉम पर एक ब्रिटिश नागरिक माइकल थेक्सटॉन को विमान के अगले हिस्से में आने को कहा। वह परदे से होते हुए विमान के अगले हिस्से में पहुंचा जहाँ उसका सामना सफरिनि से हुआ जिसके हाथ में उसका पासपोर्ट था। उसने थेक्सटॉन से पूछा कि कहीं वह सिपाही तो नहीं और कहीं उसके पास बंदूक तो नहीं। थेक्सटॉन ने नहीं में जवाब दिया। तब उसने थेक्सटॉन को घुटनों के बल बैठने को कहा और अधिकारियों से बोला कि अगर कोई विमान के नज़दीक आया तो वह एक और यात्री को मर डालेगा। विराफ दरोगा ने उसे बताया कि विमान में एक क्रू सदस्य है जो कॉकपिट का रेडियो का प्रयोग कर सकता है और उसके माध्यम से आगे बातचीत की जा सकती है। सफरिनि थेक्सटॉन के पास वापिस गया और पूछा कि क्या उसे पानी चाहिए। थेक्सटॉन ने कहा - हाँ। सफरिनि ने यह भी पूछा कि क्या वह विवाहित है और दावा किया कि उसे हिंसा और ये सब मार काट बिलकुल पसंद नहीं है लेकिन अमेरिका और इजराइल ने उनके देश पर कब्ज़ा कर लिया है और वे ढंग की ज़िन्दगी नहीं जी पा रहे।

फिर एक हाईजैकर ने थेक्सटॉन को वापिस जाने को कहा। हाइजैक का प्रकरण रात तक चलता रहा। इस दौरान एक फ्लाइट अटेंडेंट ने मैन्युअल में से चुपचाप वह पन्ना निकाल लिया जिसमें कि 3आर एयरक्राफ्ट द्वार की समस्त प्रणालियों का विवरण था और इसे एक मैगज़ीन में छुपा कर द्वार के पास बैठे यात्री को दे दिया। उसने उसे कहा कि वह अभी मैगज़ीन को अवश्य पढ़ ले और बाद में यदि आवश्यकता पड़ी तो प्रयोग कर ले। इस पृष्ठ पर अन्य जानकारियों के साथ निकासद्वार को खोलने और स्लाइड एप्रन को स्थापित करने की विधि भी वर्णित थी। रात लगभग 9 बजे सहायक विद्युत यूनिट बंद हो गयी, सभी बत्तियां बुझ गयी तथा इमरजेंसी लाइट जल गयी।

नीरजा भनोट को उनकी बहादुरी के लिए अशोक चक्र से सम्मानित किया गया था। 2004 में उनके नाम से एक स्टैंप भी जारी किया गया था। उनके माता-पिता ने नीरजा भनोट PAN AM ट्रस्ट बनाया है। यह ट्रस्ट उन लोगों को सम्मान देता है, जो अन्याय के खिलाफ आवाज उठाते हैं। यह घटना तब शुरु हुई जब कराची में यात्रियों ने फ्रैंकफर्ट जा रहे इस विमान पर चढ़ना शुरु किया। बाद में हुई एफबीआई जाँच में पता चला कि विमान के आसपास हथियारबंद रक्षकों की मौजूदगी भी इस अपहरण को टाल नहीं पाई। चारों अपहरणकर्ता कराची एयरपोर्ट सुरक्षा गार्ड के भेष में थे तथा असॉल्ट राइफल्स, ग्रेनेड्स, पिस्तौलो व प्लास्टिक विस्फोटक बेल्ट आदि से लैस थे। स्थानीय समय के अनुसार प्रातः लगभग ६ बजे अपहरणकर्ता एक वैन लेकर पैन एम उड़ान ७३ के द्वार पर यात्रियों के चढ़ने हेतु लगाई सीढियों तक आ पहुँचे। इस वैन में इस तरह से बदलाव किए गए थे जिससे कि यह एयरपोर्ट सुरक्षा वाहन जैसा लगे। इससे वे सुरक्षा प्रहरियों को चकमा देने में कामयाब रहे।अपहरणकर्ताओं ने सीढियों पर ही हमला बोल दिया तथा स्वचालित हथियारों से गोलीबारी करते हुए विमान में घुस कर नियंत्रण छीन लिया। फ्लाईट अटेंडेंट ने स्थिति को भाँप लिया और चालक दल को इंटरकॉम पर सूचित कर दिया जिसके फलस्वरूप पायलट, सह-पायलट और फ्लाइट इजीनियर कौकपिट के आपात द्वार से सफलतापूर्वक निकल भागे।[8]

ISSN(Online) : 2319-8753

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014

निष्कर्ष

पाकिस्तान ने तुरंत एस एस जी डिवीज़न भेजी तथा आर्मी रेंजर्स को तैयार रहने को कहा। घटना समाप्ति की ओर तब बढ़ी जब अपहरणकर्ताओं ने विमान के यात्रियों पर गोलीबारी शुरु कर दी। यात्री आपात द्वारों व खिड़कियों से भाग खड़े हुए और पाकिस्तानी कमांडोज़ ने इस कार्रवाई के जवाब में जहाज पर चढ़ाई कर दी। कमाड़ो यूनिट का नेतृत्व ब्रिगेडियर जनरल तारिक़ महमूद ने किया। इस ऑपरेशन को संचालित करने के लिए पाकिस्तान सेना की स्पेशल सर्विस ग्रुप (एसएसजी) की प्रथम बटालियन की शाहीन कंपनी को तैनात किया गया था। इस सारे घटनाक्रम में भारी क्षति हुई - २२ हत एवं १५० से अधिक आहत। नीरजा की बहादुरी ने देश और दुनिया को गौरवान्वित कर दिया। उन्हें मरणोपरांत विश्व भर से कई सम्मान और पुरस्कार मिले। जहाज के क्रू सहित कुल ३८० यात्री १४ विभिन्न देशों के नागरिक थे। कुल यात्रियों में भारतीय नागरिक लगभग 25% थे और मारे गए यात्रियों में 60% से अधिक। [9]

- भारत सरकार ने भी बहादुरी का सबसे बड़ा पुरस्कार "**अशोक चक्र**" से सम्मानित किया।
- नीरजा पहली भारतीय महिला थी जिसे अशोक चक्र से सम्मानित किया गया।
- पाकिस्तान सरकार ने भी उन्हें "**तमगा-ए- इंसानियत**" देकर सम्मानित किया।
- अमेरिकी सरकार ने नीरजा भनोट को "**जस्टिस फॉर क्राइम अवार्ड**" से पुरस्कृत किया।
- वर्ष 2004 में भारत सरकार ने उनके सम्मान में एक **डाक टिकट** जारी किया।
- दुनिया में नीरजा को "**हीरोइन ऑफ हाइजैक**" के नाम से जानती है।
- उनके याद में मुंबई के "**घाटकोपर**" इलाके में एक चौराहे का नाम रखा गया है।
- भारत में "**नीरजा भनोट पैन एम न्यास**" नामक एक संस्था भी कार्यरत है। यह संस्था हर वर्ष महिलाओं को बहादुरी के लिए दो पुरस्कार प्रदान करती है। एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और दूसरा राष्ट्रीय स्तर पर![9]

संदर्भ

1. "Brave in life, brave in death by Illa Vij". The Tribune. 13 नवम्बर 1999.
2. ↑ "सोनम बनेंगी जान पर खेलने वाली 'नीरजा'". बी बी सी (हिन्दी). 5 मई 2010 मूल से 18 अगस्त 2010 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 11 जून 2011.
3. ↑ "Nominations invited for Neerja Bhanot Awards". The Indian Express. 5 सितंबर 2006. मूल से 5 दिसंबर 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 26 नवंबर 2010
4. ↑ "Stamp on Neerja released". द ट्रिब्यून. 9 अक्टूबर 2004. मूल से 6 नवंबर 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 11 जून 2008
5. ↑ "इस एयर होस्टेस ने आतंकियों से बचाई थी 360 पैसेंजर्स की जान". दैनिक भास्कर. मूल से 12 जून 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 11 जून 2009.
6. ↑ सुन्दर, पुष्पा (2001). McCarthy, Kathleen D. (संपा°). Women, Philanthropy, and Civil Society. Indiana University Press, 2001. पृ° 280. मूल से 12 जून 2002 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 11 जून 2003
7. ↑ नीरजा न्यास Archived 2008 at the Wayback Machine, न्यास की वेबसाइट
8. ↑ पाण्डेय, मृणाल (1998). परिधि पर स्त्री. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ° 39. मूल से 12 जून 2005 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 11 जून 2006
9. ↑ "Sonam begins filming Neerja Bhanot biopic". द हिन्दू. अभिगमन तिथि 11 जून 2007